SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

श्रीलंका में विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण में ध्वनि व्यवस्था के व्यतिरेकी व्याघातों का प्रभाव

नागॉड वितान ब्रसील, शोधार्थी, भाषाविज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
नागॉड वितान ब्रसील, शोधार्थी

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 08/01/2024
Revised on : -----
Accepted on : 09/03/2024
Overall Similarity : 00% on 29/02/2024

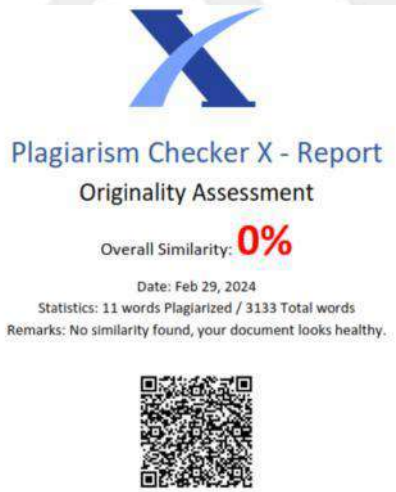

शोध सार

मनुष्य भाषा शिक्षण न केवल विचारों के सम्प्रेषण के लिए ही करता है, बल्कि भाषा समाजीकरण का मजबूत इकाई होती है। अतः भाषा के द्वारा मनुष्य समाज में अपना व्यक्तित्व बना सकता है। मनुष्य मातृभाषा के अतिरिक्त देशी–विदेशी भाषा शिक्षण में रुचि रखंता है। भाषा के अनुप्रयुक्त क्षेत्रों के रूप में समाजभाषाविज्ञान, भाषाशिक्षण, अनुवाद विज्ञान, ज्ञान क्षेत्र, विधि क्षेत्र, कोष निर्माण इत्यादि पहचाने जाते हैं।

मुख्य शब्द

भाषा विज्ञान, सामाजिकरण, हिंदी शिक्षण, व्यतिरेकी.

20 वीं शताब्दी के पूर्वाध में व्यतिरेकी पद्धति का विकास हुआ। जब द्वितीय विश्वयुद्ध चल रहा था तब उसके लिए अनेक देशों के सैनिक अमेरिका आये थे जो अलग–अलग भाषाएँ बोलते थे। उन्हें एक ही भाषा की छत्र–छाया में लाने के लिए एक ही भाषा के शिक्षण की आवश्यकता हो रही थी। उस समय भाषाओं के व्यतिरेकी या असमान स्थानों को पहचानकर उनपर अधिक ध्यान देते हुए लक्ष्य भाषा सिखायी गयी तब से व्यतिरेकी पद्धति का विकास हुआ। वर्तमान में बढ़ती भाषा शिक्षण की माँग ने व्यतिरेकी पद्धति का विकास द्रुत गति आगे बढ़ा दिया।

व्यतिरेकी के व्याघात पर विचार व्यक्त करते हुए प्रमुख विद्वान तथा चिंतक पोलितज़र का कहना है कि 'भाषाओं के शिक्षण में व्यतिरेकी विश्लेषण अध्येता की कठिनाइयों को अर्थवत्ता प्रदान कर सकता है और उनके बारे में अनुमान लगा सकता है।'[1] इसके आधार पर दोनों भाषाओं के समान–आसमान, अर्ध समान संरचनाओं की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। स्रोत और लक्ष्य भाषाओं के व्यतिरेकी अध्ययन और त्रुटि विश्लेषण में

दृढ़ संबंध स्वीकार किया जाता है जिसके आधार पर तीन उद्देश्य प्रस्तुत किये गये हैं जो पूर्वानुमान, निरूपण और परीक्षण सामग्री का निर्माण हैं।

पूर्वानुमान' का तात्पर्य है कि द्वितीय भाषा या विदेशी भाषा शिक्षण–अधिगम में लक्षय भाषा के त्रुटिपूर्वक स्थानों की पहचान या गिनाया जाना जिसके आधार पर पायी गयी त्रुटियों के निवारण हेतु भाषा अधिगम सामग्रियों का निर्माण का दिशानिर्देश प्रदान किया जा सकता है। भाषा शिक्षण–अधिगम में होने वाली त्रुटियों की पहचान और उन त्रुटियों का कारण ढूँढने में तत्पर रहना 'निरूपण' कहा जाता है। 'परीक्षण' के द्वारा सामग्रियों के निर्माण में दो पक्षों पर ध्यान दिया जाता है जिनमें से पहला है पूर्वानुमान के अनुसार कौन–से स्थान या इकाई परीक्षण के लिए योग्य है। दूसरा है परीक्षण की आवश्यकता किन–किन स्तरों या सीमाओं तक कितनी मात्रा में होनी चाहिए। इन बिंदुओं को ध्यान में रखकर भाषा शिक्षण में व्यतिरेकी पद्धति का उपयोग द्वितीय या विदेशी भाषा शिक्षण में किया जा सकता है।

भाषावैज्ञानिक दृष्टि से ध्वनि का अर्थ मानव द्वारा उच्चारित भाषा ध्वनि है या भाषा ध्वनि या भाषण ध्वनि है। भाषाविज्ञान में ध्वनि का अर्थ भाषण ध्वनि है। ध्वनि को अंग्रेज़ी में Phon कहा जाता है और ध्वनि के अध्ययन को ध्वनि विज्ञान या Phonetics कहा जाता है। भाषाविज्ञान में इसे स्वन विज्ञान भी कहा जाता है। भाषा ध्वनि की परिभाषा डॉ.सुनीत कुमार चटर्जी इस प्रकार दी थी। A speech sound is a sound of definite acoustic quality produced by the organs of speech- A give speech sound is incapable of variation[2] किसी भी भाषा में ध्वनि होती है चाहे वह भाषा सिंहली, अंग्रेज़ी या जर्मन हो। भाषाओं के अनुरूप ध्वनियों की व्यवस्था, उच्चारण और लेखन की भिन्नता होती है। इसी भिन्नता को दूर करने हेतु आजकल अंतरराष्ट्रीय स्वनिमिक वर्णमाला (IPA या International Phonetics Alphabet) का निर्माण किया गया है जिससे आजकल दुनिया की किसी भी भाषा के उच्चारण की समस्या नहीं होती। ध्वनि की परिभाषा इस प्रकार दी थी कि 'भाषा विशेष की ध्वनियों के प्रयोग, ध्वनि उत्पन्न करने वाले अंग, ध्वनियों का वर्गीकरण, ध्वनि लहर, संवहन सुना जाना, ध्वनि विकार का अध्ययन किया जाता है।[3] (भाषा विज्ञान, भोलानाथ तिवारी पृ–241) भाषा कोई भी हो, जब उसका विश्लेषण भाषा विज्ञान से किया जाता है तब परिभाषा में दी गयी इकाइयों के अनुसार ध्वनियों का विश्लेषण किया जाता है।

विश्लेषण

सिंहली–हिंदी की ध्वनि व्यवस्था के व्यतिरेकी स्थानों का विवरण

यद्यपि सिंहली और हिंदी समस्रोतीय भाषा होने के नाते दोनों भाषाओं की ध्वनि व्यवस्था की समानता अधिक पायी जाती हैं तथापि दोनों भाषाओं की अपनी विशिष्टता के कारण असमानताएँ होती हैं जो भाषा शिक्षण में व्यवघात और भाषा प्रयोग में बाधाएँ उत्पन्न करते हैं। दोनों भाषाओं की ध्वनियों के उच्चारण स्थान, प्रयत्न, जीभ की ऊँचाई, जीभ के भाग और होंठों की स्थिति और स्वर–व्यंजनों की संख्या में अधिक समानताएँ हैं।

द्वितीय भाषा या विदेशी भाषा शिक्षण में ध्वनियों का महत्वपूर्ण स्थान है। विद्यार्थियों द्वारा भाषा का औपचारिक शिक्षण प्रत्येक नवीन भाषा की ध्वनियों के उच्चारण के प्रयत्न से प्रारंभ किया जाता है। शिक्षक लक्ष्य भाषा की नवीन ध्वनियों का सही उच्चारण अनुकरण वाचन अभ्यासों से करवाते हैं। विदित है कि मातृभाषा की ध्वनियों का प्रभाव कभी–कभी द्वितीय भाषा या विदेशी भाषा की ध्वनियों के सटीक, मानक और परिनिष्ठित उच्चारण पर पड़ता है। वस्तुतः हिंदी पढ़ने वाले सिंहली विद्यार्थियों से यही स्थिति बहुधा अपेक्षित की जा सकती है, क्योंकि दोनों भाषाओं की स्वर और व्यंजन ध्वनियों की उच्चारण समानताएँ अधिक हैं।

सिंहली भाषा में उच्चरित स्वर ध्वनियों के 18 लिखित ध्वनियाँ मिलती हैं और हिंदी में स्वर ध्वनियों के 11 लिखित ध्वनियाँ मिलती हैं। स्वरों की संख्या से ही लेकर दोनों भाषाओं में व्यतिरेकीपन का आरंभ होता है। सिंहली के 18 स्वर ध्वनियों में से दो स्वर प्रयोग में नगण्य हैं जो हटा कर शेष सोलह, स्वर ध्वनियाँ मनी गयी हैं। हिंदी स्वर ध्वनियों के विषय में मतैक्य नहीं है और उसकी संख्या संबंधित भिन्न–भिन्न मत प्रकट किये हैं। केन्द्रीय हिंदी संस्थान द्वारा संपादित 'व्यावहारिक हिंदी संरचना और अभ्यास' पुस्तक में उल्लेख किया गया है कि हिंदी में 10

स्वर और 35 व्यंजन हैं। सिंहली और हिंदी ध्वनियाँ उच्चारण स्थान, प्रयत्न, प्राणत्व, घोषत्व, मात्रा, जीभ की स्थिति और होंठ के आकर आदि सभी दृष्टियों में समान है लेकिन शोध कार्य में व्यतिरेकी ध्वनियों का विश्लेषण किया गया है।

हिंदी–सिंहली स्वर ध्वनि संबंधित व्यतिरेकी स्थान

हिंदी में 'अ'[^] अर्ध विवृत जिह्वा मध्य स्वर है जो शब्द के आदि और मध्य में प्रयोग होता है। सिंहली में 'अ'[a/^] स्वर विवृत्त, जिह्वा पश्य स्वर है लेकिन शब्द के आदि में विवृत स्वर है और शब्द के मध्य और अंत में अर्ध संवृत रूप में प्रयोग होता है। इसी परिवर्तन की वजह सिंहली छात्रों के हिंदी 'अ' का मानक उच्चारण संबंधित व्यतिरेकी अशुद्धियाँ पायी जाती हैं जो, तालिका में दिखाया गया है।

हिंदी शुद्ध उच्चारण	सिंहली अशुद्ध उच्चारण
नहीं NΛhi:ṅ	Nahi:ṅ ('अ' विवृत है।)
अमूल्य Λmu:lyə	Amu:lyə (आदि 'अ' विवृत है और अंत का 'अ' अर्ध विवृतअ है।)
करना KΛrna:	Karna: ('अ' विवृत है।)
कमल KΛməl	Kamal ('अ' विवृत है।)

हिंदी और सिंहली के 'अ' का शब्द के अग्र, मध्य और अंत प्रयोग

शब्द	शब्द के मूल में 'अ'	शब्द के मध्य में 'अ'	शब्द के अंत 'अ'
हिंदी	पवन p^wən (अर्ध संवृत)	सावनsa:wən (अर्ध संवृत)	-----------
सिंहली	Laməya:(विवृत) (बच्चा)	Niwəsə(अर्ध संवृत)(घर)	Gasə(अर्धसंवृत) (पेड़)

सिंहली वर्णमाला में कुछ स्वर ध्वनियाँ हैं जो हिंदी वर्णमाला में अनुपलब्ध हैं। कभी कभी 'ऑ' देखने को मिलता है लेकिन बाकी 'ॲ /æ/, /æ:/ और ऐ/e/'(सिंहली / æ: / का सही उच्चारण हिन्दी 'ऐ' के एक रूप के आधार अंदास लगाया जा जाता है।) न के बराबर हैं, लेकिन हिंदी भाषा में ह्रस्व 'ए' का प्रयोग किसी नियम में बंधकर किया जाता है, जैसे 'ह' के पूर्व 'ए' ह्रस्व हो जाता है।

लिखित रूप	उच्चारित रूप
एहसान(e:hsa:n)	एहसान(ehesa%n)
मेहमान(me:h?ma^n)	मेहमन (meh^ma:n)

सिंहली के हिंदी अध्येता सिंहली के अपने नामों, गाँवों और संस्कृति से संबंधित अपनी विशिष्ट संज्ञा जब हिंदी में लिखते हैं तब हिंदी में चर्चित ह्रस्व ध्वनियाँ अनुपलब्ध होने के कारण ह्रस्व ध्वनितों का दीर्घीकरण किया जाता है जिससे मानक उच्चारण के स्थान पर मानकेतर उच्चारण होता है। उलटे में सिंहली नामों, गाँवों तथा सिंहली संस्कृति से संबंधित विशिष्ट संज्ञाओं के लिखने तथा उच्चारण करनेवाले भारतीय लोग भी यही पर असुविधा में पड़ते हैं और मानकेतर उच्चारण और लेखन करते हैं।

सिंहली और हिंदी दोनों भाषाओं में 'ऋ' संयुक्त स्वर माना जाता है और यह र् + इ के मिलन से बना है।[5] दोनों भाषाओं में इसका स्थान समान पाया जाता है लेकिन सिंहली और हिंदी उच्चारण में असमानताएँ पायी जाती हैं। हिंदी में इसका उच्चारण '(h)ri' बोला जाता है लेकिन सिंहली में 'ऋ' के उच्चारण के तीन प्रकार होते हैं जो [ri],[ru] और [(h)ər]हैं। तालिका में सोदाहरण दिखाया गया है।

हिंदी उच्चारण	सिंहली उच्चारण
ऋषि [rishi]	(ri उच्चारण)
ऋतु[ritu]	[ritu] (ri उच्चारण) (कभी-कभी सिंहली मे 'इतु' के रूप मे भी उच्चारण करते है)

कृति [kriti]	[**kru**ti] (ru उच्चारण)
मृत [mrit]	[**mru**tə] (ru उच्चारण)
ह्रदय[hridəjə]	[**hər**djə] (ər उच्चारण)
ह्रदयगम [hridəjəŋgəm]	[**hər**dəjəŋgəməjə] (ər उच्चारण)

सिंहली शिक्षार्थियों में 'ऐ' और 'औ' ध्वनियों से संबंधित भाषण, वाचन और लेखन में त्रुटियाँ पायी जाती हैं। हिंदी में संयुक्त स्वर 'ऐ' के उच्चारण की द्विरूपता और लेखन में एक रूप होता हैं। उच्चारण में कहीं पर 'ऐ' उच्चारण 'ai ' होता और कही पर '/æ:/'(ɛ:) होता है। शब्द में 'ऐ' स्वर के बाद यदि 'य' का प्रयोग हो, तो उसका उच्चारण 'ऐ /ai/' होता है। यदि 'ऐ' के बाद 'य' छोड़कर अन्य ध्वनि हो तो उसका उच्चारण 'æ(ɛ:)' होता है। सिंहली भाषा में 'ऐ' ध्वनि संबंधित केवल एक उच्चारण '/ai/' उपलब्ध है। इसलिए सिंहली शिक्षार्थी को हिंदी भाषा के श्रवण, भाषण और वाचन अभ्यास करते समय इसी व्यतिरेकी व्याघात से संबंधित उच्चारण अशुद्धियाँ पायी जाती हैं।

हिंदी	सिंहली
1 कैलाश [æ]	कइलाश (name of rock)
2 वैशाली [æ]	वइशाली (name)
3 ऐतिहासिक [**æ**tiha:sik][**æ**]	[**ai**tiha:sikə]अइतिहासिक (Historical)
3 भैया [**bhai**. a:][**ai**]	[**nai**tikə] नइतिक (legal)
4 तैयारी [**tai**ja:ri:][**ai**]	शइल(stones)

तालिका के विश्लेषण से बोध होता है कि हिंदी 'ऐ' स्वर का हिंदी में दो उच्चारण हैं जैसे उदाहरण 1, 2 और 3 में (ऐ/æ(ɛ :)/) का उच्चारण है और 4 और 5 में 'ऐ' का 'अइ' [ai] के रूप में उच्चारण होता है। स्पष्ट है कि सिंहली शिक्षार्थी वही स्वरों का दोनों जगहों में एक ही प्रकार का उचारण करते हैं। हिंदी 'ऐ' संयुक्त ध्वनि के लेखन में दो रूप पाये जाते हैं जैसे शुद्ध स्वर लिखें तो 'ए' पर एक मात्रा (ऐ) और व्यंजन के साथ दो मात्राएँ (कै) लगायी जाती हैं।

सिंहली स्वर व्यवस्था में ह्रस्व 'ए'[e] दीर्घ 'ए'[e:] और 'ऐ'[ai] होते हैं और हिंदी में भौतिक रूप में केवल 'ए' और 'ऐ' हैं। इस उलझन–सा स्वभाव में सिंहली अध्येता हिंदी 'ए' का उच्चारण सिंहली ह्रस्व 'ए' समझकर अशुद्ध उच्चारण करते हैं और हिंदी 'ऐ' सिंहली दीर्घ 'ए' समझकर हिंदी 'ऐ' की जगह दीर्घ 'ए' का उच्चारण करते हैं जो हिंदी उच्चारण अशुद्ध बना दिया जाता है। तालिका में उदाहरण दिये गये हैं।

हिंदी शुद्ध उच्चारण	सिंहली अध्येता के मानकेतर उच्चारण
ऐलान [ɛla:n]	ऐलान [e:la:n]
ऐसा [ɛsa:]	ऐसा [e:sa:]
वैसा [vɛsa:]	वेसा [ve:sa:]

हिंदी भाषा में 'औ' स्वर के दो रूप पाये जाते हैं। हिंदी में 'औ' ध्वनि के बाद 'व' प्रयुक्त परिसर में 'अउ [au]' और अन्य परिसर में 'औ [ɔ:]' होता है। सिंहली में 'औ' से संबंधित एक ही उच्चारण है जिसे 'अउ' बोला जाता

है। यह भी हिंदी सीखने वाले सिंहली अध्येता के उच्चारण अभ्यासों में भ्रांति पैदा करता है। निम्न तालिका में सोदाहरण व्यतिरेकीपन का विवरण दिया गया है।

हिंदी उच्चारण	सिंहली उच्चारण
1.औरत	අඋශධ (Medicine)
2.कौशल	කඋශල්‍ය (Skill)
3.गौतम [gɔ :təm]	[gaʊ rəwə] ගඋරව (Respect)
4.कौवा [kaʊ wə:]	[saʊ khjə] සඋඛ්‍ය (Health)
5.यौवन [jaʊ wən]	[yaʊ wənə] යඋවන (Young)
6. पौराणिक [poʊ ra:nikə]	[paʊ rə:nikə] පඋරාණික (Ancient)

हिंदी 1 से 3 तक उदाहरणों में 'औ' उच्चारण 'औ [:]' की तरह होता है लेकिन 4 से 5 तक उदाहरणों में 'अउ[aʊ]' के रूप में होता है। लेकिन सिंहली छह उदाहरणों में 'औ' का उच्चारण aʊ (अउ)' ही होता है। सिंहली छात्रों को हिंदी पढ़ाते समय यही अंतर की वजह भाषण और वाचन में अधिक त्रुटियाँ होती हैं।

हिंदी और सिंहली व्यंजन ध्वनियों का व्यतिरेकी विश्लेषण

सिंहली और हिंदी दोनों भाषाओं के व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण तथा लेखन में अधिक समानताएँ पायी जाती है और असमानताएँ भी। सिंहली अध्येता को हिंदी शिक्षण–अधिगम में समानताओं की समस्या नहीं है फिर भी असमान स्थानों को लेकर श्रवण, भाषण, वाचन और लेखन से संबंधित त्रुटियाँ पायी जाती हैं।

हिंदी और सिंहली व्यंजन ध्वनि व्यवस्था पर ध्यान दिया जाए तो बोध होता है कि दोनों भाषाओं के व्यजनों की संख्या का निश्चित मत नहीं है। सिंहली में मिश्र सिंहल वर्णमाला, अमिश्र सिंहल वर्णमाला, पन्सल् वर्णमाला, वदन् कवि वर्णमाला और सिदत् साँगरा वर्णमाला आदि में विभिन्न संख्याएँ दी गयी हैं। हिंदी में भी कहीं 33, कहीं 35 या कहीं 43 या 46 भी बताते हैं। उन सभी पर ध्यान देते हुए 43 की संख्या मान ली जा सकती है। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के द्वारा प्रकाशित व्यावहारिक हिंदी संरचना और अभ्यास पुस्तक में मानक व्यंजनों की संख्या 35 दी गयी है।[6] डॉ. राम गोपाल सिंह जादौन बताते हैं कि सम्पूर्ण व्यंजनों की संख्या 46 हैं।[7] जब दोनों भाषाओं की वर्णमाला पर दृष्टिपात करते हैं तब लगता है कि वर्णमाला के वर्णों की संख्या की दृष्टि से दोनों भाषाओं में व्यतिरेकीपन देखने को मिलता है।

अल्पप्राण और महाप्राण संबंधित व्यतिरेकी व्याघात

भाषण, वाचन और लेखन में प्राणत्व से संबंधित अधिक त्रुटियाँ पायी जाती हैं क्योंकि सिंहली भाषा में भी अल्पप्राण और महाप्राण होते हैं फिर भी उच्चारण में उनपर कम ध्यान दिया जाता है या लुप्त प्राय सा होता है। लेकिन सिंहली लेखन में इसपर अधिक ध्यान दिया जाता है और ग़लत वर्तनी सहित लेख अशुद्ध माना जाता है। भाषण में भी इस प्रकार की त्रुटियाँ अशुद्ध मानी जाती हैं फिर भी सुखोच्चारण और आदात के कारण महाप्राण की जगह अल्पप्राण बोला जाता है। उसी प्रभाववश सिंहली के हिंदी अध्येता हिंदी महाप्राणों के उच्चारण पर ध्यान नहीं दिया जाता है। सिंहली में महाप्राण के अर्थ भेद की स्थिति बहुत कम है लेकिन हिंदी के अल्पप्राण और महाप्राण के ग़लत प्रयोग से अर्थ भेदकता अधिक होती हैं। सिंहली शिक्षार्थी हिंदी शब्दों के महाप्राण ध्वनियों का भी अल्पप्राण कर देते हैं इसलिए मानक हिंदी के मानक उच्चारण दोष पूर्ण प्रतीत होता है और अभी–अभी में अर्थ ग्रहण करने की दिक्कत होती है। उदारू खिताब–किताब, भात–बात, माथा–माता, झूठा–जूठा।

'ण' और 'न' के सिंहली में अर्थ भेदक प्रयोग

सिंहली विद्यार्थियों के हिंदी भाषा उच्चारण में अपनी मातृभाषा के प्रभाववश मूर्धन्य 'ण' और दंत्य 'न' पर

त्रुटियाँ पायी जाती हैं। सिंहली में 'ण और न' का अंतर भाषण में पहचानना बहुत मुश्किल है क्योंकि बहुत लोग दोनों का उच्चारण दंत्य रूप में करते हैं। सिंहली लेखन में इन दोनों का सही प्रयोग और अंतर स्पष्ट दिखायी देता है। सिंहली में इन दोनों लिपियों से संबंधित अर्थ भेदकता भी पायी जाती है। हिंदी भाषी के भाषण में इन दोनों ध्वनियों के उच्चारण का अंतर स्पष्ट दिखाई देता है। सिंहली विद्यार्थियों द्वारा सिंहली में सही उच्चारण न करने से हिंदी भाषण और वाचन भी अशुद्ध एवं मानकेतर उच्चारण पाया जाता है। हिंदी में इन दोनों का उच्चारण नियमित रूप से होता है और हिंदी के द्वितीय या विदेशी भाषा के अध्येता दोनों का अंतर आसानी से ग्रहण और समझ सकता है। अधिकांश सिंहली के हिंदी अध्येताओं में सिंहली भाषा के प्रभाववश मूर्धन्य 'ण' के स्थान पर भी दंत्य 'न' का उच्चारण सुलभ है। इससे श्रुतलेख अभ्यासों में मानकेतर उच्चारण की समस्यावश अशुद्ध वर्तनी लेखन में पायी जाती है।

'श' और 'ष' से संबंधित व्यतिरेकी विश्लेषण

सिंहली अध्येता के हिंदी शिक्षण–अधिगम में 'श' और 'ष' ध्वनियों से संबंधित व्याघात मिलते हैं। दोनों भाषाओं में उच्चारण स्थान और प्रयत्न समान हैं और दोनों भाषाओं में ऊष्माक्षर माने जाते हैं। फिर भी सिंहली अध्येताओं के शिक्षण कौशलों के चारों स्तरों में इससे संबंधित व्याघात द्रष्टव्य हैं। सिंहली में इन ध्वनियों के उच्चारण में तालव्य और मूर्धन्य पर ध्यान देने के बिना उच्चारण किया जाता है और दोनों का उच्चारण समान रूप में किया जाता है। अतः भाषण और वाचन में इनका अंतर पहचानना मुश्किल है। लेकिन लेखन में इसका प्रयोग नियमित रूप में होना है वरना अशुद्ध लिखावट मानी जाती है। सिंहली के हिंदी अध्येता जिस प्रकार सिंहली में इनका प्रयोग करता है उस प्रकार हिंदी में प्रयोग करने से हिंदी उच्चारण में मानकेतर प्रभाव आ जाता है। यह व्याघात विद्यार्थियों के उच्चरण और लेखन में अधिक द्रष्टव्य है।

सिंहली अध्येता का श और ष का अशुद्ध प्रयोग	श और ष का शुद्ध प्रयोग
कोशिष	कोशिश
निश्कर्ष	निष्कर्ष
विषेश	विशेष
प्रविश्टि	प्रविष्टि

'र' ध्वनि संबंधित व्यतिरेकी विश्लेषण

'र' लुंठित व्यंजन है जिसका दोनों भाषाओं में प्रयोग समान है फिर भी भाषागत अपनी विशिष्टता के कारण विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण–अधिगम में कहीं–कहीं व्याघात देखने को मिलते हैं।

i. संयुक्त स्थिति में 'र' के पूर्व और बाद का व्यंजन पूरा लिखा जाता है। जब 'र्' व्यंजन के पूर्व में प्रयोग होता है तब 'रेफ़', 'र्' के आगे के व्यंजन के ऊपर लिखा जाता है। सिंहली अध्येता के हिंदी लेखन में रेफ़ के प्रयोग संदर्भ और स्थान संबंधित अशुद्धियाँ देखने को मिलते हैं।

सिंहली अध्येताओं के रेफ़ के अशुद्ध प्रयोग	सामान्य रेफ़ के शुद्ध प्रयोग
निरमाण	निर्माण
संदरभ	संदर्भ
पुनररचना	पुनर्रचना
कतर्व्य	कर्तव्य
दशर्न	दर्शन

ii. व्यंजन के बाद 'र्' के प्रयोग में दो रूप मिलते हैं जिनके साथ सिंहली विद्यार्थियों में अशुद्धियाँ पायी जाती हैं।

व्यंजन और र	शुद्ध लेखन	अशुद्ध लेखन
व् +र =व्र	व्रत	व्रुत
प् +र =प्र	प्रथम	प्रथम
ड् +र=ड्र	ड्रामा	ड्रमा
ट् +र = ट्र	राष्ट्र	राषट्

नुक्तेदार व्यंजनों से संबंधित व्यतिरेकी स्थान

सिंहली में क़[k], ख़[kh], ग़[g], ज़[z], ड़[d], और ढ़[dh] ध्वनियाँ न होने के कारण सिंहली शिक्षार्थी के हिंदी भाषण, वाचन और लेखन में इनसे संबंधित अशुद्ध प्रयोग पाये जाते हैं, लेकिन श्रवण में इन ध्वनियों का असर अधिक नहीं पड़ता फिर भी श्रुतलेख अभ्यास के समय अधिक त्रुटियाँ पायी जाती हैं। निम्न तालिका के उदाहरणों से हिंदी शुद्ध उच्चारण और सिंहली शिक्षार्थियों के अशुद्ध प्रयोग स्थानों का उल्लेख किया गया है:

हिन्दी शुद्ध प्रयोग	सिंहली अशुद्ध प्रयोग
क़मीना [ḳ əmi:na:]	कमीना [kəmi:na:]
क़ानून[ḳ a:nu:n]	कानून [ka:nu:n]
ख़बर [ḳ həbər]	खबर [khəbər]
ख़त [ḳ hət]	खत [khat]
ग़म [gham]	गम [Gam]
ग़रीब [gharib]	गरीब [Gəri:b]

उत्क्षिप्त व्यंजन प्रयोग संबंधी व्यतिरेकी स्थान

सिंहली में इन दोनों ध्वनियों का अनुपलब्ध होने के कारण सिंहली के हिंदी अध्येताओं में हिंदी उत्क्षिप्त व्यंजनों के उच्चारण तथा लेखन में अधिक त्रुटियाँ द्रष्टव्य हैं। उत्क्षिप्त 'ड़' तथा 'ढ़' की जगह बहुधा मूर्धन्य 'ड' तथा 'ढ' का प्रयोग किया जाता है। सिंहली में उत्क्षिप्त व्यंजन नितांत अनुपलब्ध हैं। यही व्यतिरेकपन सिंहली के हिंदी शिक्षार्थियों के भाषाण, वाचन और लेखन पर अधिक व्याघात डाला जाता है।

हिंदी शुद्ध प्रयोग	सिंहली अशुद्ध प्रयोग
लकड़ी[lakəḍ i:]	लकड्डी [lakədi:]
कपड़ा[kapəḍ a:]	कपड्डा [kapəda:]
चढ़ना[chaḍ hna:]	चढ्ढना [chadhna:]
पढ़ना[paḍ hna:]	पढ्ढना [padhna:]

इस प्रकार सिंहली शिक्षार्थियों के हिंदी शब्दों के उत्क्षिप्त व्यंजनों के उच्चारण में नुक्ते के बिना उच्चारण पाये जाते हैं जो मानक हिंदी के स्थान पर मानकेतर का प्रयोग है।

अनुस्वार और अनुनासिकता के प्रयोग संबंधित व्यतिरेकी स्थानः हिंदी भाषा में अनुस्वार और अनुनासिकता के व्यवहार के बीच बहुत अंतर होता है। इनके प्रयोग से अर्थ में भी परिवर्तन आ जाता है। हिंदी में अनुनासिकता सभी स्वरों का गुण है लेकिन सिंहली में इस प्रकार की विशेषता नहीं है। सिंहली में अनुनासिकता दिखाने के लिए पाँच ध्वनियाँ होती हैं जिनमें से उचित ध्वनि शब्दों में संदर्भ के अनुसार व्यंजन के साथ संयोग होती है। वे ध्वनियाँ [ŋ gə], [ŋ jə], [ŋ ɖə], [ŋ də] और [m̆bə] हैं।

सिंहली अनुनासिकता	हिन्दी अनुनासिकता
[gaŋ̇gə] (नदी)	आँगन
[hoŋ̇ɖəyə] (सूंड)	ढूँढना
[haŋ̇də] (चाँद)	चाँद
[am̆bə] (आम)	ताँबा

सिंहली और हिंदी दोनों भाषाओं में अनुस्वार का प्रयोग है और उसके लिए अलग–अलग ध्वनियाँ हैं। सिंहली में वर्ग अक्षरों के [ñ] और [nə] के शुद्ध व्यंजन [न्]रूप का प्रयोग अनुस्वार के लिए किया जाता है। बाकी (ञ) [ñə], (ण)[ɳə], (न)[nə] और (म)[mə]ध्वनियाँ शब्दों में स्वतंत्र लिपि के रूप में प्रयोग होती हैं लेकिन उच्चारण में नासिक्य गुण प्रकट होता है। हिंदी में शब्द के मध्य ङ, ञ, ण, न, और म ध्वनियों का प्रयोग जब होता है तब आधा लिखा जाता है या फिर उसी ध्वनि के पूर्व वर्ण उसीवर्ग की लिपि होती तो अनुस्वार लिखा जाता है। उदाः चम्पा–चंपा। लेकिन सिंहली अध्येता की हिंदी लेखन में कभी–कभी अनुस्वार की जगह अनुनासिकता का प्रयोग द्रष्टव्य है।

सिंहली अध्येता के अशुद्ध प्रयोग	शुद्ध प्रयोग
अँक	अंक-अङ्क
रँग	रंग-रङग
पँचम	पंचम-पञ्चम
डँडा	डंडा-डण्डा
चँदन	चंदन-चन्दन
चँपा	चंपा-चम्पा

सिंहली शिक्षार्थी हिंदी सीखते समय श्रवण, भाषण, वाचन और लेखन में अनुस्वार और अनुनासिकता लेकर त्रुटियाँ करते हैं। उच्चारण में अनुस्वार की जगह अनुनासिकता या आनुनासिकता की जगह अनुस्वार बोलते हैं। लेखन में भी वही ग़लती अधिक पायी जाती हैं।

अशुद्ध प्रयोग	शुद्ध प्रयोग
ढूंढना	ढूँढना
पांच	पाँच
सँसार	संसार
आंख	आँख
हंस	हँस
हँस	हंस

निष्कर्ष

द्वितीय, अन्य या विदेशी भाषा शिक्षण में स्रोतभाषा और लक्ष्य भाषा की ध्वनि व्यवस्था पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। अध्येता भाषा शिक्षण का श्री गणेश ध्वनि के श्रवण से ही करता है। ध्वनि शिक्षा में शिक्षक लक्ष्य भाषा की ध्वनियों का अशुद्ध उच्चारण करे तो मौखिक संचार की अशुद्धियों के कारण अध्येता तक ग़लत संदेश का संचार होता है तब अध्येता जो मानकेतर श्रवण करता है, वही लेखन और भाषण में प्रयोग किया जाता है। मौखिक अभिव्यक्ति के मानकेतर संचार से अध्येता मानकेतर प्रयोग पीढ़ी–दर–पीढ़ी ले जाएगा जिससे भविष्य में मानक भाषा के बदले मानकेतर भाषा का प्रचार–प्रसार की संभावना है, क्योंकि जो ध्वनि बार–बार सुनने से वह समाज में समाज सम्मत व्यवहार बनाया जाता है। विद्वानों का विचार है कि छात्र जब कुछ ध्वनियों का बार–बार सुनता है तो उसके मस्तिष्क पर उसका दबाव पड़ता है और वह इस सीमा तक बढ़ जाता है कि अंत में वाणी के माध्यम से प्रकट होता है। (फार्नफील्ड)

संदर्भ सूची

1. सिंह, दिलीप (2010) *अन्य भाषा शिक्षण के बृहत संदर्भ,* वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली।
2. शर्मा, रामगोपाल "दिनेश" (2006) *भाषाविज्ञान और हिन्दी,* विकास पेपर बैक्स, गांधी नगर, दिल्ली।
3. वत्स, जितेंद्र सिंह, देवेन्द्र प्रसाद (2009) *भाषाविज्ञान और हिन्दी भाषा,* निर्मल पब्लिकेशन, 139, गली नं. 3, कबीर नगर, शाहदरा, दिल्ली–110094।
4. Dissanayake, J.B (2006) *Sinhala Aksharа Vicharaya*, Sumith Publication, (117/7), Pirise Mawatha, Kalubovila.
5. जैन, महावीर सारण (2015) *व्यावहारिक हिंदी संरचना और प्रयोग,* राष्ट्रभाषा ऑफसेट प्रेस, बल्काबस्ती, राजा की मंडी, आगरा, 282–002।
6. जादौन, राम गोपाल सिंह (2009) *हिन्दी व्याकरण और रचना,* साहित्य संस्थान, ई –10/660, उत्तरांचल कॉलोनी, लोनी बॉडर, गाजियाबाद, उ.प्र.।

****